10. सत्यप्रकाश जोशी"

1. सोवन मछली"

इसके अन्तर्गत कवि ने कविता में मुहावरो के माध्यम से यह ज्ञान देने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार मधुहारा मछली पकड़ने का कार्य करता है उसी से उसका जीवन चलता है। मछली पकड़ने वाला मीठे जल की मछली हो या खारे जल की मछली हो उसे उतना ही प्रयास करना पड़ता है लेकिन दोनो में जो अन्तर है वह यह है कि समुद्र की मछली के लिये उसे घर के सुख्यों को त्यागकर रात के सूकुन को तोड़कर दुर समुद्र में जाकर जाल बिछाना पड़ता है तब जाकर मछलियाँ पकड में आती है उन्हे बेंचकर धन कमाता है।

लेकिन यही मेहनत वह मीठे जल मे करे तो उसे घर का सुख सुकून के साथ भरपेट भोजन भी मिलता है और ये सुख सुकून परदेश के पैसे और दुख से कही ज्यादा सुखदायी हो सकता है लेकिन इसके लिये व्यक्ति की भावना में अन्तर लाना आवश्यक है कि वो घर के सुख को ज्यादा महत्व दे तभी उसका जीवन सफल हो सकता है।

इस प्रकार कवि का मन्तव्य उन लोगों के प्रति है जो कि धन की चाह में अपने घर - परिवार, मातृभूमि और सुख सकून को छोड़कर परदेश में अधिक पैसा कमाने की चाह में जाते है जहां उन्हे अधिक मेहनत के साथ पैसा तो मिलता है लेकिन वो

Scanned by CamScanner

सुख शकुन नहीं मिलता है जो अपने घर -परिवार वालों से मिलता है इसलिये व्यक्ति को मेहनत करनी है तो अपनी मातृभूमि पर करें। तो पैसा तो मिलेगा ही स्वयं अपने साथ न्याय करेगा और समाज को नई दिशा देने का कार्य करेगा।

∴ इसलिए कवि पलायन वादी नीति को छोड़ने का आग्रह किया है।

2. "और न बुझे रे धनवीर ने"

इसमे कवि ने अपने भाव अभिव्यक्त किये है कि व्यक्ति स्वयं अपने हाथ से खून-पसीना बहाकर मेहनत करता है। लोहे को कूटता है और उस लोहे को कूट-कूट कर साकल (शस्त्र) बनाता है। हथकडियाँ भी बनाता है तो यही सांकल व हथकडिया, मनुष्य को दुःख देने मे या बन्दी बनाने के काम कर आती है जो मानव को दुख देने का ही काम करती है। तो कही लोग लोहे को कूटकर तीर-कमान व भाले का निर्माण करते है जो युद्ध में लोगो का रक्त ही बहा दे या सृष्टि का नाश करने में काम आते है

सृष्टि का ये दुःख स्वयं मानव का ही बनाया हुआ है तो फिर मानव क्यो ऐसे हथियारो हथियारो का निर्माण करता है। यदि मेहनत ही करनी और लोहे को कुटकर कुछ बनाता है। तो हल क्यो नही बनाता ताकि उनसे वह खेती

Scanned by CamScanner

मेहनत कर सके। खेत - खलियानों मे धान पैदा कर सकता है अपने हाथो से खुशहाली ला सकता है बनाना ही है तो बच्चो के लिये खिलौने ही बनायें ताकि उनसे खेलकर जीवन मे खुशियाँ ला सके। या हथोडे ही बनायें ताकि ऊंचे महल बना सके। बनाना ही है तो पहिये बनाये ताकि जीवन आगे रफ्तार से चल सके। बनाना ही है तो सुई बनाये ताकि जीवन के बन्धन को बांध सके।

इस प्रकार कवि की प्रेरणा है कि व्यक्ति अपनी मेहनत को ऐसे कार्यो में लगाये कि जिसमें जीवन सुखमय और शांतिमय व प्रगति के पथ पर अग्रसर हो। ताकि दुख व विनाश की ओर न जाए। यदि व्यक्ति की सोच के अनुरूप परिवर्तन हो जाये तो इस सृष्टि पर सुख का निवास हो सकता है यही कवि की कविता के माध्यम से प्रेरणा है।

Scanned by CamScanner